ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 93 अंक : 1
आश्विन कृष्णपक्ष एकादशी
विक्रम संवत् 2075
कलि संवत् 5119
05 अक्टूबर 2018 से 21 अक्टूबर 2018
दयानन्दाब्द : 194
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,119
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
श्री ब्रह्मप्रकाश आर्य, जयपुर
डॉ. स्नेहलता शर्मा, राज. सस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
डॉ. संदीपन आर्य, जयपुर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा सम्पादक, आर्य्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018। मो. – 9314032161
मुद्रक : राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल :
aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

निवेदक

विजय सिंह भाटी
प्रधान(9829027908)

डॉ. सुधीर शर्मा
मंत्री (9314032161)

संदीपन आर्य
कोषाध्यक्ष (9413205943)

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, स्वागत समिति
दूरभाष : 01125937987

सुरेशचन्द्र आर्य
प्रधान सा. आर्य प्रतिनिधि सभा
दूरभाष : 9824072509

प्रकाश आर्य
मन्त्री सा. आर्य प्रतिनिधि सभा
दूरभाष : 9826655117

धर्मपाल आर्य
सम्मेलन संयोजक
प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
दूरभाष : 9810061763

महासम्मेलन प्रचार अभियान समिति : सर्वश्री अशोक आर्य मोतीकटला, देवेन्द्र शास्त्री, दीपक शास्त्री, सतीश मित्तल, अतुल जी अग्रवाल सांभर जयपुर, जगदीश प्रसाद आर्य जखराना अलवर, ओमप्रकाश आर्य भरतपुर, ओमप्रकाश आर्य रावतभाटा, नरदेव आर्य चित्तौडगढ, मदन जी आर्य कादेडा अजमेर, रमेश गोस्वामी आर्य कोटा, पवन श्रीवास्तव हनुमानगढ़, सेवाराम जॉगिड जोधपुर, सत्यवीर आर्य अलवर, अशोक आर्य कोटपुतली, रमेश आर्य कोटपुतली, सुखलाल आर्य टोंक, आनन्द जी हनुमानगढ, वेदप्रकाश आर्य धौलपुर, गौतमसिंह, अमित आर्य, सुभाष शास्त्री बीकानेर, हेमसिंह आर्य, कैलाशचन्द्र, किशन जी गहलोत, दुर्गादास जी जोधपुर, श्रीचन्द आर्य, कॅवरलाल सुमन कोटा, सत्यवीर आर्य भरतपुर, विजय शर्मा भीलवाड़ा, महेश बागड़ी पाली, दशरथ चारण सिरोही, गगेन्द्र आर्य जैसलमेर, किशनाराम जी नागौर, पुनमाराम आर्य बाड़मेर, जीववर्धन शास्त्री बांसवाड़ा, मूलाराम जी राजसमन्द, मार्तण्ड प्रकाश बूँदी, रामजीलाल आर्य सवाई माधोपुर, मदनमोहन जी गंगापुर, रामानन्द जी आर्य बहरोड, सुधाकर शर्मा झुनझुनु, विजय शास्त्री पिलानी, ताराचन्द्र जी टमकोर, भागचन्द्र आर्य, विश्वास पारीक अजमेर, जीवनलाल आर्य उदयपुर, गौरमोहन श्रीगंगानगर, रविन्द्र आर्य सुजानगढ़, रणजीत शास्त्री तारानगर, भवदेव शास्त्री टाटोटी।

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा — प्रधान कार्यालय : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा, पार्क, जयपुर –302018

योहि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते।। –वाल्मीकि रामायण – किष्किन्धाकाण्ड, सर्गः 23 ।।
अर्थात् समय को जानने वाला जो पुरुष अपने मित्रों के साथ उत्तम व्यवहार करता है उसका राज्य, यश और प्रताप उत्तरोत्तर बढ़ता है।

चतुर्वेद शतकं महायज्ञ एवं संगीतमय वेदपाठ सम्पन्न

आर्यसमाज कुन्हाड़ी स्थित थर्मल कॉलोनी क्लब बिल्डिंग कोटा में 27 सितंबर से 30 सितम्बर 2018 चार दिवसीय चले यज्ञ में कुल 70 यजमानो ने भाग लिया यज्ञ के ब्रह्मा पं विरधी लाल शास्त्री रहे। यज्ञ के उपरांत 1:30 घन्टे नियमित उन्ही वेदमंत्रो के पद्यात्मक का संगीतमय वेदपाठ श्री बल्लभ मुनी वानप्रस्थी द्वारा कराया गया, यज्ञ के उपरांत स्वामी शान्तानंद सरस्वती द्वारा ईश्वर विषय, सुख की प्राप्ति के साधन, यज्ञ करने से लाभ एवं दान की महिमा आदि को समझाया। अन्तिम दिन श्री शिवनारायण उपाध्याय द्वारा रचित वैदिक ऋषिकाएं पुस्तक का विमोचन किया गया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कोटा उत्तर के विधायक प्रहलाद गुन्जल जी रहे एवं कार्यक्रम में कोटा की विभिन्न आर्यसमजो के लोगो ने भाग लिया व अन्त में शांतिपठ के बाद सभी ने ऋषि प्रसाद प्राप्त किया।

पी. सी. मित्तल, प्रधान

134 वाँ ऋषि स्मृति सम्मेलन महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन जोधपुर के कार्यक्रम की झलकियाँ

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन जोधपुर में आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान् वैयाकरण आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश प्रवचन करते हुए।

कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमोः । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। – अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय–व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार–बार सोचना चाहिए।

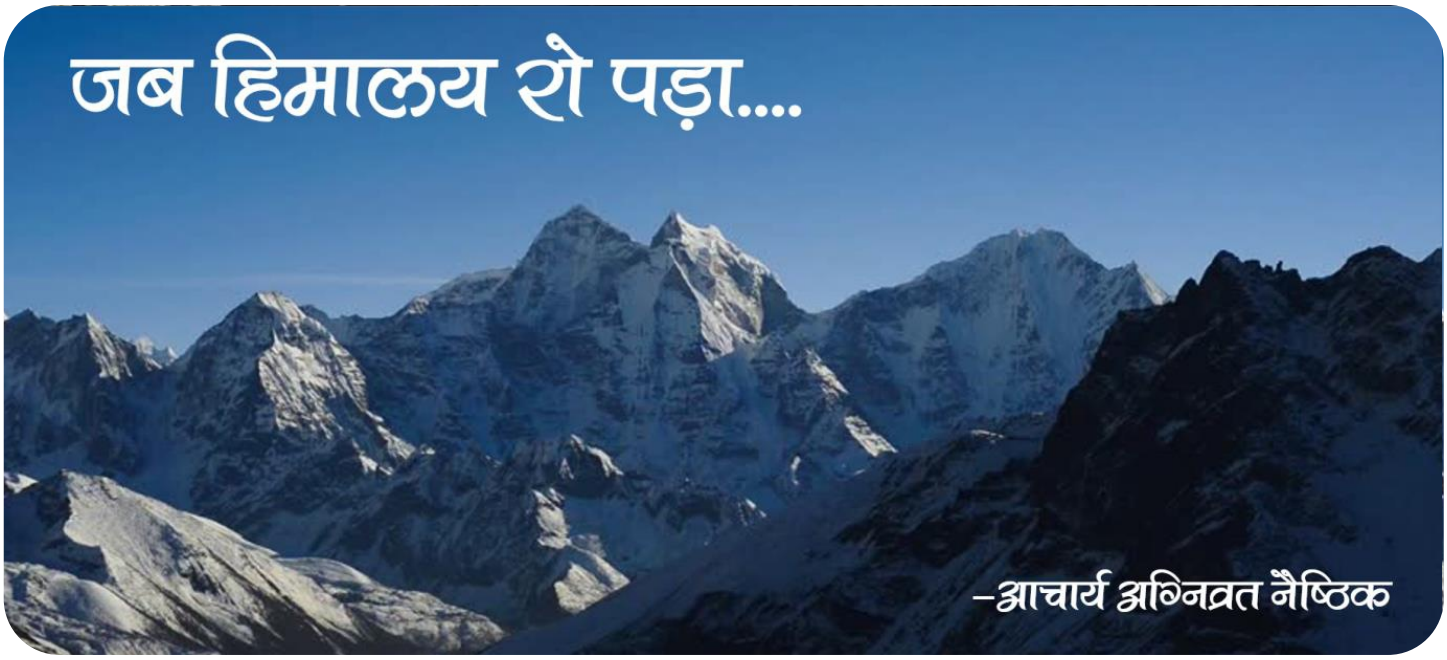

हिमालय इस भूमंडल का एक सर्वाधिक पवित्र पर्वत रहा है। यह देव भूमि व ऋषियों की तप स्थली के रूप में सर्वत्र विख्यात रहा है। इस महान् नागराज ने अपनी पवित्र गोद में परमयोगिराज भगवत्पाद महादेव शिवजी एवं योगेश्वरी भगवती उमा देवी के साथ योगसाधना के साथ–साथ वैदिक विज्ञान के द्वारा ब्रह्मांड के गंभीर रहस्यों को उद्घाटित करते, दुष्ट दलनार्थ पाशुपत जैसे महान् अस्त्रों का निर्माण करते देखा है। इसी हिमगिरि ने परमर्षि भगवान् ब्रह्मा जी, अमित पराक्रमी भगवान् विष्णु जी एवं महान् ऐश्वर्यसंपन्न देवराज इंद्र को योग साधना के साथ–साथ वेद द्वारा भौतिक एवं आध्यात्मिक विद्याओं की गहन साधना करते देखा है। इसी की पावनी गोद में सहस्त्रों तपःपूत देवों व ऋषि–मुनियों को परमपिता परमात्मा की अमृतरूपी छाया में आनंद की अनुभूति करते देखा है। इसी की गोद से निःसृत पवित्र गंगा–यमुना आदि सरिताओं के तीर पर आर्य महापुरुषों व योगियों को योगाभ्यास एवं इसके द्वारा वेद विद्याभ्यास करते देखा है। इसी की गोद में दुष्यंत पुत्र भरत जैसे चक्रवर्ती सम्राट् पले–बढ़े एवं संस्कारित हुए थे। वैदिक धर्म के महान् संरक्षक योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण अपनी धर्म पत्नी भगवती देवी रुक्मिणी के साथ विवाहोपरान्त गर्भाधान से पूर्व 12 वर्ष परमात्मा की साधना में मग्न रहे थे। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम, महावीर परमविद्वान् बाल ब्रह्मचारी हनुमान्, महान् धनुर्धर अर्जुनादि पांडवों एवं अनेक महापुरुषों का किसी न किसी प्रकार इस महान् पवित्र पर्वतराज से संबंध रहा है।

हे हिमालय! तुम्हें इन सभी महापुरुषों पर बड़ा गर्व था। संभवतः तुम सोचते थे कि इन महापुरुषों की संतति ऐसे ही महान् आदर्शों वाली बनी रहेगी। किंतु धीरे–धीरे इस हिमालय ने इस भारत को बर्बर विदेशी अतातायियों से पैरों तले कुचलते देखा और इसने इस भारत के कई टुकड़े होते भी देखा। यह सब दृश्य देखकर तुम घायल अवश्य हुए परंतु टूटे नहीं। तुमने तैमूर, बाबर, अकबर, औरंगजेब, डायर आदि के अत्याचारों को देखा, तब भी तुम टूटे नहीं परंतु जब कथित स्वतंत्र भारत में शासन व न्यायालयों ने वैदिक व भारतीय संस्कृति–सभ्यता पर करारी चोट की, स्वतन्त्रता के नाम पर दुराचारिणी स्वच्छन्दता को सम्मान मिला, तब तुम्हारे हृदय से आह फूट पड़ी। जब सर्वोच्च न्यायालय ने 'लिव इन रिलेशन' के नाम से किसी कन्या वा विवाहिता महिला का किसी भी परपुरुष के साथ स्वेच्छया रहने को वैध ठहराया और उसमें भगवान् श्रीकृष्ण जी महाराज का नाम घसीटा गया, तब तुम्हारा हृदय टूट गया और आह भी न कर सके। तुम्हारी यह दीनदशा को देखकर प्राचीन ऋषियों व देवों के आत्मा भी भयभीत हो गये। अब दिनांक 06.09.2018 को पुनः सर्वोच्च न्यायालय ने तुम्हारे हृदय में छुरा घोंप दिया। समलैंगिकता के घोर पाप व अप्राकृतिक कुकृत्य को वैध बताकर यह सिद्ध हो गया कि यह देश मनुष्यों के रहने योग्य तो क्या, यहाँ जंगली जानवर व पशु–पक्षी भी भय खाएंगे। इस निर्णय से हिमालय का हृदय विदीर्ण होकर आहें भरने लगा। अब कल के निर्णय को सुनकर जंगली और पालतू पशु–पक्षी भी भागने लगेंगे। उन्हें भय होगा कि ये समलैंगिक कामी व स्वच्छन्द मानव शरीरधारी कहीं उन्हें ही अपनी हवस का शिकार न बना लें। ये जानवर जजों, वकीलों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, मीडियाकर्मियों, मानवाधिकारवादियों, उच्च प्रबुद्ध कहाने वाले, सभ्य व प्रगतिशील दिखने वालों को देखकर विशेश रूप से भागेंगे, क्योंकि स्वच्छन्दताजन्य कामज्वर इन्हें ही अधिक सता रहा है। स्वच्छन्द कामुक भोजन, कामुक अध्ययन, कामुक दर्शन–श्रवण, फिर शासन व न्यायालयों के कामुक निर्णयों की मुहर, तब दुधमुँही बच्चियों पर अत्याचार क्यों नहीं होंगे? अब तो घरेलू चिड़िया व चिड़ा जैसे कामी पक्षी भी इस कामी मानवदेहधारी जानवर को देख कर चीं–चीं करते भाग जाया करेंगे। अब उन्हें जितना भय अपने शिकारी जानवर और मनुष्य

का नहीं होगा, उतना भय शिक्षा व सभ्यता का आवरण ओढ़े इस बर्बर कामी व स्वच्छन्द कथित मनुष्य का होगा। इस कथित मनुष्य को जो कुछ भय था, वह दूर हो गया है। देश में राष्ट्रवाद का शंखनाद करने वाले संगठन वा नेता मौन हैं, मानो उनकी वाणी को लकवा मार गया है। उधर एक भगवाधारी समलैंगिकता का पुरोधा अग्नि के समान रंग का वेश धारण करने वाला एक कथित संन्यासी प्रसन्नता से झूम रहा है। देश–विदेश का मीडिया आनंद मना रहा है। इस समलैंगिकता के पुरोधा नकली बाबा ने महान् ब्रह्मचारी महर्षि दयानंद सरस्वती व आर्य समाज के सिद्धांतों की अंत्येष्टि कर डाली है। दुर्भाग्य से इस बाबा के समर्थक स्वयं को आर्यसमाजी व महर्षि दयानंद का भक्त कहते हैं। इन्होंने आर्य समाज को खंड–खंड कर डाला है, तो कुछ महानुभाव एकता का प्रयास कर रहे हैं। ये संगठनवादी समलैंगिकता, आतंकवाद, नक्सलवाद, देशद्रोह सबके साथ मिलकर संगठन का परिचय देना चाहते हैं। आर्य समाज के नियम व वैदिक आर्श सिद्धांतों की चिता जले, इसकी किसी को कोई चिंता नहीं।

हे हिमालय! तुम्हें कुछ आशा थी, तो ब्रह्मचर्य व वेदविद्या के इस युग के महान् प्रणेता महर्षि दयानंद के अनुयायी आर्य समाज से, किंतु वह भी इन कामी बाबाओं के कारण दिशाहीन होकर भटक रहा व विनाश के पथ पर अग्रसर है। कुछ महानुभव सोशल मीडिया पर गुरुकुलों में समलैंगिकता होने का प्रचार कर रहे है, यह बात सुनी मैंने भी है परन्तु अब सभी कामी चोर की भांति नहीं बल्कि अकड़ कर ये पाप करेंगे। हे पर्वतराज! मैं तुम्हारे दर्द को जानता हूं। मेरे जैसे अनेक देशभक्त व वेदभक्त भी तुम्हारे दर्द को अनुभव कर रहे हैं। मैं अपने वेदविज्ञान के द्वारा संपूर्ण पापान्धकार को मिटाने की दिशा में शनैः–2 आगे बढ़ रहा हूं परंतु लगभग जन्म से रुग्ण शरीर व परायों के साथ अपनों का भी विरोध इसमें भारी बाधा उत्पन्न कर रहा है। मैंने जीवन में असत्य भाषण व कर्म को करने की इच्छा भी नहीं की, तब शेष जीवन में भी ऐसा करने की सोच भी नहीं सकता और न असत्य–अधर्म के सम्मुख झुक ही सकता, भले ही कोई भी विपत्ति क्यों न आये। मैंने तुम्हारे दर्द को मिटाने की अचूक दवा को तैयार तो कर लिया है परंतु इसके विस्तृत अनुसंधान, प्रचार व प्रसार में न केवल देश, वेद, ऋषियों व देवों का दर्द अपने हृदय में समेटे ऊर्जावान्, स्वस्थ, बलवान् युवा पीढ़ी का साथ चाहिए, अपितु पर्याप्त संसाधनों के लिए निःस्पृह भामाशाह भी चाहिए। आज जो बौद्धिक दास विदेशी ज्ञान विज्ञान व सभ्यता को अपना आदर्श मानते हैं तथा प्राचीन भारतीय व वैदिक ज्ञान विज्ञान को दीन व निकृष्ट मानकर स्वयं को ही मूर्खों का वंशज मानते हैं, उनके मनोराग व बौद्धिक दासत्व को नष्ट करने की दवा मेरे पास है, जो चाहे, आकर ले सकता है।

हे नगराज! कैसी विडंबना है कि मैं इन अभागे भारतीयों को महाबुद्धिमान् व पवित्रात्मा पूर्वजों का वंशज बताता हूं, तो ये मंदबुद्धि व मनोरोगी भारतीय मुझे ही गाली प्रदान करते हुए घोषणापूर्वक कहते हैं कि नहीं..... हम तो मूर्खों के वंशज हैं, हम बन्दर आदि पशुओं के वंशज हैं। ऐसे ही अभागे समलैंगिकता व 'लिव इन रिलेशन' जैसे स्वच्छन्दी कानूनों पर नग्न नृत्य करते हैं। ये कानून तो उदाहरण मात्र हैं, अभी तो बौद्धिक दासत्व व निकृष्ट पशुता का प्रारंभ है। अभी तो कुछ सम्बन्ध पवित्र बचे हैं, धीरे–2 कानून इन्हें भी नष्ट भ्रष्ट कर देंगे। असुरों, राक्षसों व पिशाचों के आत्मा भी इन कथित प्रगतिशीलों के आचरण पर लजायेंगे। परंतु हे हिमालय! धैर्य रखो, मेरे पास इनके सुधारने के उपाय है, संभवतः हजारों सज्जन देशभक्त भी अभी इस आर्य समाज, हिन्दू समाज व देश में विद्यमान हैं। वे एक होकर वैदिक ज्ञान–विज्ञान के ध्वज के नीचे आकर इस दासत्व के विरुद्ध संघर्ष अवश्य करेंगे, ऐसी मैं आशा करता हूं। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो मैं भी तेरी भांति टूट जाऊंगा। इस विषम परिस्थिति व दुर्बल स्वास्थ्य एवं संसाधनों के अभाव में मैं भी कहीं शांत हो जाऊँगा।

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

ज्ञिज्ञासा – समाधान

जिज्ञासा–वेदों की प्रामाणिकता या सत्ता को नहीं मानने वाला क्या कोई व्यक्ति ईश्वर को प्राप्त कर सकता है और ऋषि, महर्षि आदि कहला सकता है?

ईश्वर प्राप्ति से आशय 'मुक्ति ' से है।

मानवता, सांगानेर, जयपुर

समाधान –वेदों को न मानने वाला व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता और न ही ऋषि महर्षि आदि कहला सकता है क्योंकि ईश्वर का विशुद्धस्वरूप वेद में ही कहा गया है। अन्य किसी मत के ग्रन्थ में नहीं। जब व्यक्ति ईश्वर के विशुद्ध स्वरूप को जानेगा ही नहीं तो वह मुक्त कैसे हो सकता है ? क्योंकि वेद में कहा है–

वेदाहमेतं पुरूषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्यवाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।। यजु. ३१.१८

अर्थात् किस पदार्थ को जान के मनुष्य ज्ञानी होता है? उत्तर – उस महान् परमेश्वर ही को यथावत् जान के ठीक ठीक ज्ञानी होता है, अन्यथा नहीं। जो सबसे बड़ा, सबका प्रकाश करने वाला और अविद्या अन्धकार अर्थात् अज्ञानादि दोषों से

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ।। गीता – 14/11।।
सत्त्वगुण की अभिव्यक्ति को तभी अनुभव किया जा सकता है, जब शरीर के सारे द्वार ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं।

रहित है, उसी पुरुष को मैं परमेश्वर और इष्टदेव जानता हूँ। उसको जाने बिना कोई मनुष्य यथावत् ज्ञानवान नहीं हो सकता, क्योंकि उसी परमात्मा को जान के और प्राप्त होके जन्म मरण आदि क्लेशों के समुद्र समान दुःख से छूट के परमानन्दस्वरूप मोक्ष को प्राप्त होता है। अन्यथा किसी प्रकार से मोक्ष को प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए जो ईश्वर को यथार्थ रूप से जानने वाला है, वह वेदों को अवश्य मानेगा। बिना वेद मंत्रो के द्रष्टा होने के कोई ऋषि महर्षि भी नहीं कहला सकता। ऋषि होने के लिए मन्त्र द्रष्टा बनना आवश्यक है। तात्पर्य यह है कि वेद को माने बिना व्यक्ति पूर्ण रूप से मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकता और न ही ऋषि कहला सकता।

आचार्य सोमदेव जी, अजमेर

सभा अधिकारियों द्वारा विभिन्न आर्य समाजों में भ्रमण एवं निरीक्षण कार्यक्रम

रींगस 20–05–2018 दिनांक को देवेंद्र शास्त्री एवं ललित आर्य द्वारा रींगस, जिला सीकर में आर्य परिवार श्री जगदीश जी से संपर्क किया उनके द्वारा संचालित योग शिविर एवं अन्य कार्यक्रमों की जानकारी ली गई स्थानीय स्तर पर संगठन करने के लिए विचार विमर्श हुआ।

अजमेर :– दिनांक 25/5/2018 – 2/6/2018 तक प्रचार –प्रसार हेतु राजस्थान के विभिन्न कार्यक्रमों में 6 सदस्यीय दल ने भ्रमण किया। ऋषि उद्यान अजमेर में आर्यवीर दल शिविर में आर्यवीरों को सम्बोधित किया श्री ब्रह्मप्रकाश आर्य, श्री सुभाष आर्य, श्री वंशीधर आर्य, श्री हनुमान आर्य, दीपक शास्त्री एवं श्री देवेन्द्र शास्त्री इस भ्रमण दल के सदस्य रहे।

जोधपुर :– महर्षि दयानन्द स्मृति भवन में चल रहे आर्यवीर दल शिविर में भाग लिया तथा वहाँ के पदाधिकारियों से मिलकर आगामी कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त की।

आबु :– आर्ष गुरुकुल आबुपर्वत में चल रहे वार्षिकोत्सव में भाग लिया तथा आर्यवीर दल राजस्थान द्वारा सम्पूर्ण प्रदेश में कार्य विस्तार की दृष्टि से तीन दिवसीय विचार संगोष्ठी रखी गई जिसमें 25 सदस्यों, शिक्षकों तथा पदाधिकारियों ने भाग लिया

उदयपुर :– दिनांक 1/6/18 को उपर्युक्त 6 सदस्यीय दल ने आगामी आर्यवीर दल एवं पतंजलि के संयुक्त तत्वावधान में चित्तोड़गढ़ में लगने वाले आवासीय शिविर हेतु उदयपुर स्थित नवलखा महल (सत्यार्थ प्रकाश भवन) में रात्रि विश्राम किया तथा प्रातः कन्यागुरुकुल चित्तोड़गढ़ में शिविर की रूपरेखा तैयार की स्थानीय पदाधिकारी श्री विक्रम आर्य, राधेश्याम आर्य एवं विशाल आर्य आदि के साथ मिलकर शिविर स्थल का निरीक्षण किया।

महर्षि दयानंद स्मृति भवन जोधपुर दिनांक 10/6/ 18 को स्मृति भवन में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अंतरंग कार्यकारिणी की मीटिंग रखी गई। जिसकी अध्यक्षता सभा प्रधान श्री विजय सिंह भाटी ने की। वेद प्रचार संगठन विस्तार तथा आर्य समाजों से संबंधित विभिन्न समस्याओं पर विचार किया गया अजमेर तथा अन्य स्थानों पर सभा की अचल संपत्तियों की सुरक्षा हेतु अंतरंग में महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किया। इस बैठक में प्रचार वाहन द्वारा सभा मंत्री डॉ. सुधीर शर्मा, पुस्तकालय अध्यक्ष श्री अशोक शर्मा, वरिष्ठ उपप्रधान श्री जगदीश प्रसाद आर्य, जखराना, कोषाध्यक्ष श्री संदीपन आर्य आय व्यय निरीक्षक श्री सुखलाल आर्य, अंतरंग सदस्य श्री देवेंद्र शास्त्री ने जयपुर से भाग लिया, बैठक में जोधपुर की आर्य समाजों के प्रांतीय प्रतिनिधियों सहित कार्यकारिणी के पदाधिकारियों उपप्रधान श्री सेवाराम आर्य, श्री किशन लाल गहलोत, श्री हेमसिंह, श्री कैलाश आर्य, रमेश गोस्वामी, श्री चंद गुप्ता आदि ने भाग लिया।

सुखलाल आर्य

वैदिक प्रश्नोत्तरी लिखित परीक्षा।

ऋषि मिशन अजमेर, आर्यवीर दल राजस्थान, आर्य समाज पुष्कर, अजमेर के द्वारा वैदिक ज्ञान प्रश्नोत्तरी लिखित परीक्षा वैदिक संस्कृति एवं महर्षि के विचारों का प्रचार प्रसार करने एवं भावी पीढ़ी को वैदिक ज्ञान से जोड़ने के लिए दिनांक 24 से 2 अक्टूबर 2018 तक जिन विद्यालयों में वैदिक प्रश्नोत्तरी लिखित परिक्षा आयोजित की गई है। उन का विवरण निम्न प्रकार है –

1. महाराणा प्रताप उच्च माध्यमिक विद्यालय चौरड़िया, जोधपुर 127 परिक्षार्थी ।
2. महिला बी एड कॉलेज हटूंडी अजमेर 100 परिक्षार्थी ।
3. बालाजी रॉयल पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर 300 परिक्षार्थी ।
4. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हाथीखेड़ा अजमेर 150 परिक्षार्थी ।

नोट– वैदिक ज्ञान प्रश्नोत्तरी लिखित प्रतियोगिता आयोजित करवाने हेतु सम्पर्क करें। 9314394421

इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88 ।।

अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथी घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

वेद स्वाध्याय (मुक्ति से पुनरावृत्ति)

कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।
को नो मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं मातरं च।। ऋ. १। २४। १।।

हम लोग (कस्य) कैसे गुण, कर्म, स्वभाव युक्त (अमृतानाम्) अमृत मोक्ष को प्राप्त आत्माओं में (कतमस्य) किसका और (देवस्य) परमसुख मोक्ष को देने वाले देव का (चारु नाम) सुन्दर नाम (मनामहे) जानें कि जो (नूनम्) निश्चित ही (कः) कौन सुखरूप देव (नः) मोक्ष को प्राप्त हुये हम लोगों को (मह्या) बड़ी भारी (अदितये) अखण्ड पृथिवी के ऐश्वर्यों को भोगने के लिये (पुनः) बार बार (दात्) जन्म देता है जिससे कि (पितरम्) माता पिता (च) बन्धु, पुत्र आदि का (दृशेयम्) दर्शन करता हूँ।

उत्तर – अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम्।
स नो मह्मा अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं मातरं च।।
ऋ. १.२४.२।।

हम सब स्वप्रकाशस्वरूप, अनादि, मुक्ति, परमात्मा का नाम पवित्र जानें, जो हमको मुक्ति में आनन्द भुगा कर पृथ्वी में पुनः माता–पिता के सम्बन्ध मे जन्म देकर माता–पिता का दर्शन कराता है। वही परमात्मा मुक्ति का व्यवस्थापक और सबका स्वामी है।

दुःखों से अत्यन्त छूट जाने को मुक्ति कहते हैं। अत्यन्त का अभिप्राय यह नहीं कि आगे मुक्त पुरुष का जन्म होगा ही नहीं। अत्यन्त बहुत या अधिक का वाचक भी है जैसे कोई कहे कि वह अत्यन्त दुःखी या निराश है, तब यही जानना चाहिये कि अमुक व्यक्ति बहुत दुःखी अथवा बहुत निराश है।

उपनिषद् में जो यह कहा **न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तत** इसका अभिप्राय भी यहीं है कि जब तक मुक्ति का समय होता है तब तक वह इस संसार में नहीं अपितु परमात्मा के आनन्द में मग्न हो मुक्ति का सुख का समय होता है। छत्तीस सहस्त्र बार सृष्टि बने बिगड़े, इतना समय मुक्ति का होता है।

मुक्ति भी निष्काम कर्मों का फल है। जीव का शरीरादि पदार्थ और साधन परिमित हैं। सीमित शरीर से असीमित मुक्ति प्राप्ति के कर्म नहीं किये जा सकते। इसके अतिरिक्त ईश्वर का अनन्त आनन्द भोगने का असीम सामर्थ्य, कर्म और साधन जीवों में नहीं है। इसलिए वे अनन्त सुख नहीं भोग सकते। जिसके साधन अनित्य हैं, उसका फल नित्य कभी नहीं हो सकता और जो मुक्ति में से कोई भी जीव लौटकर इस संसार में न आये तो संसार हो उच्छेद अर्थात् जीव निःशेष हो जाने चाहियें। यदि ईश्वर अन्त वाले कर्मों का अनन्त फल देवे तो उसका न्याय नष्ट हो जाये। जैसे कोई व्यक्ति सदैव मधुर रस का सेवन करता है उसको वैसा सुख नहीं होता और वह कटु, नमकीन या तीखा खाने की इच्छा करता है वैसे ही मुक्तात्माओं की फिर से जन्म लेने की इच्छा होती है। मन्त्र में यही कहा है– **को नो मह्या अदितये पुनर्दात्** कौन मुझे इस पृथ्वी पर फिर से वापिस भेजता है और मैं पितरं च दृशेयं मातरं च माता– पिता को देखता हूँ साथ ही भाई बन्धु जन को भी।

सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में दिए मुक्ति से पुनरावृत्ति होने के तर्कों के पश्चात् अब एक बात को जानना शेष रह गया है कि मुक्ति के पश्चात् जब जन्म होता है तो किन कर्मो पर आधारित है, क्योंकि **क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे** परमात्मा का साक्षात्कार होने पर कर्म क्षय हो जाते हैं तो फिर मुक्ति के पश्चात् क्या बिना कर्मों के ही जन्म परमात्मा देता है अथवा उनके कर्म शेष रह जाते हैं, आदि।

इसका उत्तर यह है कि जैसे पहले कहा जा चुका है मुक्ति भी निष्काम कर्मों का फल है। निष्काम कर्म तब प्रारम्भ होते हैं जब विवेक ज्ञान होता है। जैसे अग्नि में अन्य को भूंजने पर यद्यपि उसकी आकृति और अन्न गुण पूर्ववत् ही बने रहते हैं परन्तु उनकी अंकुरित होने की क्षमता नष्ट हो जाती है। अब उन्हें कितना ही खाद पानी दिया जाये, वे अंकुरित नहीं होते। इसी भाँति ज्ञानाग्नि से दग्ध बीज हुये कर्म जितने समय तक मुक्ति की अवधि है उतने समय तक वे निष्प्रभावी रहते हैं। जैसे किसी व्यक्ति का स्थानान्तरण होता है तो वह अपना बड़ा लेन देन चुकता कर के ही जाता है। ऐसे ही मुक्तात्मा के जन्म जन्मान्तर के कर्म या तो भोग लिये जाते हैं अथवा दग्ध बीज हो जाते हैं या इतने ही शेष रह जाते हैं जिससे साधारण मनुष्य जन्म मिले। यह आवश्यक नहीं कि सभी कर्म शरीर से ही भोगे जाते हैं। कुछ का भोग मन से भी होता है प्रायश्चित्त का विधान इसलिए किया है कि पाप करने वाले का मन इतना शुद्ध हो जाये कि पाप का विचार भी उसके मन में न आए। इनमें यही पक्ष युक्ति संगत है कि मुक्ति के समय इतने ही कर्म अवशिष्ट रह जाते हैं जिनमें मुक्ति के पश्चात् साधारण मनुष्य जन्म प्राप्त हो सके। परन्तु मुक्ति की अवस्था में वे भी दग्ध बीज सम बने रहते हैं।

अब एक प्रश्न अन्य उपस्थित होता है कि जब मुक्ति विवेक ज्ञान का फल है तो विवेक ज्ञान होते ही शरीर छूट जाना चाहिए। इसका उत्तर सांख्यदर्शन ३.८२ में दिया है– **चक्रभ्रमणवद् धृतशरीरः** । जैसे कुम्हार चक्र में दण्ड लगाकर उसे घुमाता है। कुछ समय इसी भाँति घुमाने के पश्चात् वह दण्ड को निकाल लेता है, परन्तु चक्र फिर भी घूमता रहता है। इसी प्रकार विवेक ज्ञान के पश्चात् भी प्रारब्ध कर्मों के कारण जीवन्मुक्त का शरीर बना रहता है।

आचार्य देवव्रत सरस्वती
प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल

आर्य समाज शाहपुरा के चुनाव सम्पन्न।

आर्य प्रतिनिधि राजस्थान के उपप्रधान एवं निर्वाचन अधिकारी श्री मदनलाल आर्य ने आर्य समाज शाहपुरा के चुनाव सम्पन्न करवाये। निर्वाचित सदस्य इस प्रकार हैं– प्रधान – हरिशचन्द्र शर्मा उपप्रधान – चन्द्र प्रकाश झंवर मंत्री – राधेश्याम जीनगर कोषाध्यक्ष – सत्यनारायण तोलाबिंया अन्तरंग सदस्य – जयन्त ओझा

आर्य समाज रामपुरा कोटा में आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य वीरदल राजस्थान की मीटिंग सम्पन्न जिसमें अन्तरंग कार्यकारिणी के साथ कोटा संभाग के आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें स्थानीय समस्याओं के समाधान तथा आगामी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन से सम्बन्धित कार्य योजना तैयार की गयी।

आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचारक श्री पण्डित ओमदत्त वैदिक शास्त्री द्वारा कोटा संम्भाग के आर्य समाजों का संक्षेप में संगठनात्मक सक्रियता विश्लेषण

03/08/18 –आर्य समाज सवाई माधोपुर के मंत्री श्री रामजी लाल जी से मिलकर सभा की गतिविधियों की सूचना दी।

05/08/18 – 06/08/18 –आर्य समाज रामपुरा कोटा के मंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उप प्रधान श्री रमेशचन्द जी से कोटा संभाग की समस्त आर्य समाजों को संगठित करने की दिशा में विचार विमर्श किया।

07/08/18 –आर्य समाज तलवन्डी के श्री मूल चन्द जी से विचार विमर्श।

08/08/18 –आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा के संरक्षक श्री जे एस दुबे जी से विचार विमर्श एवं सभा के नियमों एवं उपनियमों की जानकारी दी।

10/8/18 – 11/08/18 –आर्य समाज बारा के मंत्री श्री लालचन्द जी पूर्व मंत्री एवं वर्तमान पदाधिकारी श्रीमति गायत्री नागार से आर्य समाज के संगठन रविवार संत्सग के बारे में विचार विमर्श तथा समाज के संरक्षक श्री जगदीश नागर से मिलकर दैनिक यज्ञ एवं संरचनात्मक कार्यवाहियों की समिक्षा की।

12/08/18 –आर्य समाज झालावाड के मंत्री नेमीचन्द गुप्ता जी से विचार विमर्श एवं सत्संग उपस्थिति एवं भवन का अवलोकन किया।

13/08/18 –आर्य समाज झालरापाटन के कार्यकारी प्रधान श्री ओकांर लाल जी मंत्री श्री मदन जी से वार्ता निर्माण कार्य का विश्लेषण सत्संग एवं उपस्थिति रजिस्टर का अवलोकन किया।

18/08/18 –आर्य समाज किशनगंज के प्रधान लक्ष्मी नारायण जी एवं मंत्री श्री चन्दालाना जी नागर से विचार विमर्श एवं भवन का निरीक्षण तथा उपस्थिति सत्संग एवं आय – व्यय का विश्लेषण सही पाया गया।

23/08/18 – 24/08/18 –आर्य समाज केलवाडा के श्री वैदिक विद्वान जी श्री वेदप्रिय शास्त्री जी से मिलकर धन्यवाद किया, तथा गुरूकुल एवं – आर्य समाज को गतिविधियों श्री नरेश आर्य के साथ संस्था का विश्लेषण एवं इतिहास की जानकारी सभा से अवगत कराई।

31/08/18 – 01/09/18 –आर्य समाज छबडा के श्री मदन आर्य जी एवं मंत्री श्री मनोहर लाल जी से मिटिंग एवं कार्य स्थल की गतिविधि जैसे सत्संग उपस्थिति एवं भवन का निरीक्षण किया, आर्य समाज छीपाबडोद बारा के श्री पदाधिकारी श्री सूरजमल जी से विचार विमर्श भवन एवं सत्संग उपसिथति की जानकारी ली एवं सभा को अवगत कराया।

05/09/18 –आर्य समाज सुनेल झालावाड के कोषाध्यक्ष श्री नन्द लाल राठौर एवं प्रधान श्री राजेन्द्र प्रजापति एवं मंत्री श्री राजेन्द्र जी गुप्ता से मिलकर सत्संग यज्ञशाला एवं निर्माण कार्य की गतिविधियों का निरीक्षण एवं आय व्यय के रजिस्टर का अवलोकन किया तथा सभा की और से हर प्रकार की सहायता का आश्वासन दिया।

पं. ओमदत्त की दैनिक डायरी से साभार

- **परमात्मा की बनायी हुई इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता ।**

– सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 232 / 2017-2019 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

- समस्त आर्य समाज अपने भवन पर ओ३म् ध्वज अनिवार्य रूप से फहरायें एवं मुख्य प्रवेश द्वार एवं भवनों के द्वार पर ''आर्य समाज/आर्य समाज मन्दिर'' इस प्रकार अवश्य अंकित करवायें। यथा समय आर्य समाज भवन, मुख्य द्वार, परिसर की बाउण्ड्री वॉल की मरम्मत, कलर पेन्ट आदि करवायें। आर्य समाज की सम्पत्तियों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों का है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कभी भी आर्य समाज का निरीक्षण किया जा सकता है। कृपया अवगत रहें।
- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का मुखपत्र ''आर्य मार्तण्ड'' का प्रत्येक अंक नवम्बर–द्वितीय अंक से पीडीएफ फॉरमेट में भी उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस फॉर्मेट में प्राप्त करने के लिए अपना ईमेल पता, नाम एवं सम्पर्क सूत्र aryamartand@gmail.com पर भेजें। वाट्स एप्प पर ''सत्यार्थ प्रकाश क्रान्ति, आर्य वीर राज. सूचना, आर्य वीर दल के अन्य सभी ग्रुप्स में नियमित रूप से उपलब्ध करवाया जा रहा है ।
- आर्य समाजों में होने वाली समस्त गतिविधियाँ ऋषि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही संचालित की जावें। उक्त प्रयोजनार्थ ही आर्य समाज संस्थाएँ अपने परिसर एवं भवन अन्य सम्बन्धित संस्थाओं को नियमानुसार उपलब्ध करवा सकती हैं। महर्षि दयानंद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल उद्देश्यों वाली संस्थाओं एवं संगठनों आदि के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एतदर्थ स्वीकृति नहीं है। साथ ही समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों को यह
- भी निर्देशित किया जाता है कि वे आर्य समाज के भवन अथवा परिसर को व्यवसाय की दृष्टि से किराये पर देने से पूर्व सभा से लिखित में स्वीकृति अनिवार्यतः प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में यह भी संसूचनीय है कि आर्य समाज के पदाधिकारियों को समाज के भवन, दुकान, जमीन अथवा किसी भी प्रकार की परिसम्पत्तियों को विक्रय करने का अधिकार नहीं है

आतिथ्य –आहुति

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा जयपुर में कार्यालय परिसर में निरन्तर आने वाले अतिथियों के लिए अस्थायी आवास एवं भोजन हेतु संचालित आतिथ्य–यज्ञ में अपनी बहुमूल्य आहुति देकर इस पवित्र यज्ञ को सुचारू रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे सभी आहुतिदाताओं का बहुत–बहुत आभार । अन्य जो भी इस व्यवस्था के सफल संचालन में अपनी आहुति भेंट करने के इच्छुक हों वे 9352547258 पर सम्पर्क कर सकते हैं। जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, स्मृति, विवाह आदि अवसरों पर आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित इस अतिथि यज्ञ में अपनी आहुति अर्पित पुण्यभागी बनें।

आगामी कार्यक्रम

1.महिला आर्य समाज मानसरोवर, जयपुर में ऋग्वेद पारायण यज्ञ दिनांक 11 अक्टूबर से 14 अक्टूबर 2018 तक।

2. सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव नवलखा महल, गुलाब बाग उदयपुर दिनांक 6 से 8 अक्टूबर 2018 तक।

3. ऋषि मेला परोपकारिणी सभा केसरगंज अजमेर द्वारा स्थान ऋषि उद्यान दिनांक 16 से 18 नवम्वर 2018 तक।

4. कियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़, गुजरात दिनांक 18 से 25 नवम्बर 2018 तक।

5. अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिनांक 25 से 28 अक्टूबर 2018।

सम्मेलन स्थल :– स्वर्ण जयंती पार्क, रोहणी, सैक्टर–10, दिल्ली भारत

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

प्रेषक:– सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
हनुमान ढाबे के पास , राजा पार्क, जयपुर–302004

खाता धारक का नाम : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
यूको बैंकA/c No.:18830100010430 , जयपुर
IFSC - UCBA 0001883

प्रेषित

विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।